शास्त्र में एक ऐसी सच्चाई छिपी है जिसे अक्सर लोग नहीं जानते: फरिश्ते केवल स्वर्गीय प्राणी नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर के सेवक हैं, जो यहाँ पृथ्वी पर हमारे लिए सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। इब्रानियों 1:14 में लिखा है:

“क्या ये सब सेवक आत्माएँ नहीं हैं जिन्हें उन लोगों की भलाई के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस हैं?”

जैसे एक डॉक्टर का अधिकांश समय अस्पताल में बीमारों के पास जाता है, वैसे ही फरिश्ते—हालांकि उनका घर स्वर्ग में है—पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्यों को पूरा करने में समय बिताते हैं। उनका उद्देश्य है उद्धार पाए हुए लोगों की सेवा करना और यह सुनिश्चित करना कि विश्वासियों के जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हों।

फरिश्तों की अदृश्य उपस्थिति

हम में से अधिकांश लोग दिनभर इस बात से अनजान रहते हैं कि लाखों फरिश्ते हर दिन पृथ्वी पर घूमते हैं और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार काम करते हैं। क्योंकि फरिश्ते आत्मिक प्राणी हैं (भजन 104:4; इब्रानियों 1:7), वे भौतिक रूप से बंधे नहीं हैं। शास्त्र

हमें बताता है कि वे कई रूपों में प्रकट हो सकते हैं—जैसे आग, बादल, जानवर, या सामान्य इंसान (निर्गमन 13:21; गिनती 22:22–31; उत्पत्ति 18–19)।

इसका मतलब है कि आपके जीवन में कभी आप बिना जाने किसी फरिश्ते से मिल चुके हों। इसलिए इब्रानियों 13:1–2 हमें याद दिलाता है:

“भाईचारे का प्रेम बना रहे। अजनबियों के प्रति आतिथ्य करना
न भूलें, क्योंकि इस प्रकार कुछ लोगों ने अनजाने में
फरिश्तों का स्वागत किया है।”

यह सिर्फ एक नैतिक सुझाव नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक चेतावनी है। परमेश्वर कभी-कभी अजनबियों के माध्यम से हमारे हृदय की परीक्षा लेते हैं और हमें अप्रत्यक्ष रूप से उनकी सेवा का अवसर देते हैं।

फरिश्तों के प्रति शास्त्रीय आतिथ्य के उदाहरण

अब्राहम इसका उदाहरण हैं। एक दिन, जब वह अपने तम्बू के द्वार पर

बैठे थे, तीन पुरुष दिखाई दिए। उन्हें अनदेखा करने के बजाय, अब्राहम दौड़कर उनका स्वागत करते हैं, उन्हें विश्राम और भोजन करने के लिए कहते हैं। उन्हें यह नहीं पता था कि वे दो फरिश्ते और स्वयं परमेश्वर हैं (उत्पत्ति 18:1–8)।

लोत ने भी उत्पत्ति 19:1–3 में दो अजनबियों का अपने घर में स्वागत किया। प्रारंभ में वे निमंत्रण स्वीकार नहीं करते, लेकिन लोत जोर देकर उन्हें भोजन और विश्राम देने पर मजबूर करता है। बाद में उसे पता चलता है कि वे फरिश्ते हैं, जिन्हें उसके परिवार को न्याय से बचाने के लिए भेजा गया था।

ये कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि आतिथ्य केवल दया नहीं है—यह पूजा भी हो सकती है। यह परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति हमारी संवेदनशीलता और सम्मान का प्रतीक है।

आज के समय में आतिथ्य का महत्व

आतिथ्य का मतलब केवल अपने घर में किसी को सोने देना नहीं है। इसका अर्थ है अजनबियों की जरूरतों को पूरा करना, खासकर जब वे असहाय हों। यह भोजन, पैसा, सुनने का समय, आध्यात्मिक मार्गदर्शन, या केवल सम्मानपूर्वक व्यवहार भी हो सकता है।

आज की दुनिया में प्रेम ठंडा हो गया है, जैसा कि यीशु ने मत्ती 24:12 में कहा था। कई लोग स्वार्थी बन गए हैं, अपनी सुरक्षा और आराम में व्यस्त हैं, और दूसरों के प्रति करुणा कम दिखाते हैं। लेकिन शास्त्र सिखाता है कि उदारता और दया उस हृदय की पहचान हैं जो परमेश्वर के अनुरूप है।

यीशु ने लूका 6:35 में कहा:

“अपने शत्रुओं से प्रेम करो, भलाई करो, उधार दो और प्रत्याशा
न रखो; और तुम्हारा पुरस्कार बड़ा होगा, और तुम सर्वोच्च के पुत्र बनोगे।”

कभी-कभी हमें ऐसे लोग मिलते हैं जो कहते हैं, “मैंने आज कुछ नहीं खाया,” या “क्या आप मेरी यात्रा का खर्च मदद कर सकते हैं?” अक्सर हमारे पास पर्याप्त होने के बावजूद हम कहते हैं, “मेरे पास कुछ नहीं है।” लेकिन अगर आपके पास कुछ है, चाहे थोड़ी मात्रा में, तो दें। केवल उनके लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लिए।

दान में विवेक

यह नहीं कहता कि आपको बेवजह देना चाहिए। परमेश्वर हमें बुद्धिमानी से प्रबंधक बनने के लिए भी बुलाते हैं। यदि कोई सिगरेट, शराब या नशीली दवाओं के लिए पैसे मांगे, तो यह आवश्यकता नहीं है—यह बंधन है। पवित्र आत्मा पाप में भागीदार नहीं होता (इफिसियों 5:11)।

यदि कोई व्यक्ति नशे में है या स्पष्ट रूप से दुरुपयोग कर रहा है, तो उसे सहायता न दें। इसके बजाय उन्हें सुसमाचार सुनाएँ। जैसा कि यीशु ने कहा:

“मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीएगा, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर शब्द से जीवित रहेगा।” (मत्ती 4:4)

अधिकतर मामलों में लोग सच में जरूरतमंद होते हैं। याद रखें—आप भी कभी उसी स्थिति में रहे होंगे। शायद आपको मदद की जरूरत थी—भोजन की नहीं, बल्कि किराया, शिक्षा या भावनात्मक समर्थन की। उस स्मृति को करुणा में बदलें।

न्याय और पुरस्कार का चित्र

यीशु अंतिम न्याय का चित्र मत्ती 25:31–46 में प्रस्तुत करते हैं। जब वह लौटेंगे, तो मनुष्यों को भेड़ और बकरियों की तरह अलग करेंगे। फिर वे धर्मियों से कहेंगे:

“आओ, हे मेरे पिता द्वारा धन्य घोषित, उस राज्य को वारिस बनो
जो तुम्हारे लिए तैयार किया गया है… क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पेय
दिया…”

धर्मी चकित होकर कहेंगे, “प्रभु, हमने यह कब किया?”

और यीशु उत्तर देंगे:

“सत्य कहता हूँ तुम्हें, जब तुमने मेरे इन छोटे भाइयों में
से किसी एक के साथ ऐसा किया, तो तुमने मेरे साथ किया।” (मत्ती 25:40)

बाकियों से कहेंगे:

“मुझसे दूर हो जाओ… क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन नहीं दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पेय नहीं दिया…”
(मत्ती 25:41–43)

यीशु सिखाते हैं कि हमारी करुणा—या उसकी कमी—आख़िरकार उन्हीं की ओर निर्देशित है। जरूरतमंदों को ठुकराना, स्वयं यीशु को ठुकराने के बराबर है।

अंतिम प्रोत्साहन

अगली बार जब आप किसी जरूरतमंद को देखें, तो रुकें। पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन मांगें। हो सकता है वह व्यक्ति सिर्फ कोई आम चेहरा न हो—वे फरिश्ता हों, या परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक दैवी अवसर।

आइए हम पृथ्वी की उदासीनता के कारण स्वर्गीय पुरस्कार को न खोएं। खुले हृदय, खुले हाथ, और खुले घर के साथ जीवन जियें।

> “[illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]” —[illegible] *6:9*

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp